पाठ– 2 भारत का भौतिक स्वरूप

भूगोलवेताओं का मानना है, कि भारत का जो भौतिक स्वरूप है, वह विश्व में पाये जाने वाले समस्त प्रकार के भू–आकृतियों का मिश्रण है। यहां पर पर्वत,पठार ,मैदान,घाटीयॉ समस्त प्रकार की भू–आकृतियॉ पायी जाती है।

भारत में विभिन्न प्रकार के शैल खण्ड पाये जाते है, जो कुछ मुलायम होती है कुछ कठोर होती है।भारत में भिन्न प्रकार की मृदा पायी जाती है जिनका विभाजन आकार तथा रंग के आधार पर किया जाता है। मृदाओं का रंग,आकार ,प्रकार उसकी जन्मदात्री शैल पर ही निर्भर करता है,कि उसका निर्माण किस शैल से हुआ हैं।

किसी भी भू–भाग का निर्माण अचानक से नही होता उसके निर्माण को अनेकों काल खण्डों से गुजरना पडता है।भू–भाग के निर्माण में आन्तरिक तथा बाहरी बल कार्य करते है, बाहरी बल बाहरी भाग का संसोधन करते है, और आन्तरिक बल निर्माण का कार्य करते हैं।

भू–भाग के निर्माण के प्रमुख सिद्धान्तों में से एक प्रमुख सिद्धान्त प्लेट विवर्तनिक का सिद्धान्त हैं,जिसके अनुसार हमारी पृथ्वी का भू–गर्भ 7 प्रमुख प्लेटों और कुछ छोटी प्लेटों से बना है।

प्रमुख विवर्तनिक प्लेंटें–

1–प्रशान्त महासागरीय प्लेट
2–उत्तर अमेरिकी प्लेट
3–दक्षिण अमेरिकी प्लेट
4–अफ्रीकी प्लेट
5–अंटार्कटिक प्लेट
6–यूरेशियन प्लेट
7–इंडो–आस्ट्रेलियन प्लेट

प्लेटों की गति के कारण प्लेटों के अंदर तथा बहार महा पीय शैलों में दबाव उत्पन्न होता है, जिसके कारण ज्वालामुखी,बलन,भ्रशन की क्रियायें होती हैं।

प्लेटों की गतियों का वर्गीकरण–सामान्य रूप से प्लेटों की गतियों को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

1– अभिसारी परिसीमा
2– अपसारी परिसीमा
3– रूपान्तर परिसीमा

अभिसारी परिसीमा– जब भू–गर्भिक प्लेटें एक दूसरे के निकट आती है तो अभिसारी परिसीमा का निर्माण करती हैं।

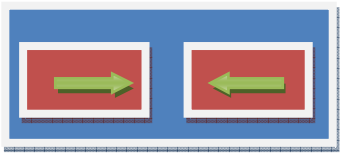

अपसारी परिसीमा– जब भू–गर्भिक प्लेटें एक दूसरे से दूर जाती हैं तो अपसारी परिसीमा का निर्माण करती हैं।

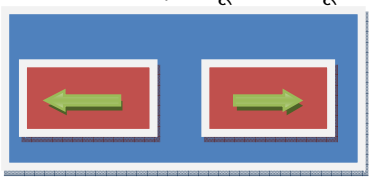

रूपान्तर परिसीमा– जब भू–गर्भिक प्लेटें एक दूसरे के समान्तर क्षैतिज दिशा में गति करती हैं तो रूपान्तर परिसीमा का निर्माण करती हैं।

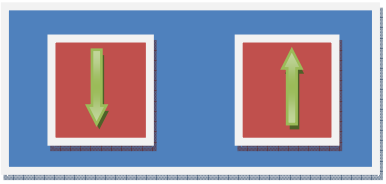

महाद्वीपों के निर्माण में प्लेटों की गति के सिद्धान्तों का बहुत प्रभाव पडा हैं इन्ही गतियों के कारण वृहत महाद्वीप(पैंजिया) भी दो भागों में विभाजित हो गया।

1–गोडवाना लैण्ड

2–अंगारा लैण्ड(लॉरेंशिया)

गोडवाना लैण्ड में भारत,आस्ट्रेलिया,दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, अंटार्कटिक के क्षेत्र शामिल थे।संवहनीय धाराओं ने भू–पर्पटी को अनेक भागों मे विभाजित कर दिया और इस प्रकार भारत–आस्ट्रेलिया की प्लेट गोंडवाना भूमि से अलग होने के बाद प्रवाहित होने लगी। उत्तर दिशा में प्रवाह के परिणामस्वरूप ये प्लेट अपने से विशाल प्लेट यूरेशियन प्लेट से टकरायी इस टकराव के कारण इन दोनो प्लेटों के बीच स्थित 'टेथिस' भू–अभिनति के अवसादी चट्टान , वलित होकर हिमालय तथा पश्चिम एशिया के पर्वतीय भाग के रूप में विकसित हो गये।

भारत का भौगोलिक विभाजन– भारत को निम्न प्राकृतिक भागों में विभाजित किया गया है–

1–उत्तर का पर्वतीय भाग (हिमालय पर्वत)

2–उत्तरी मैदान

3–प्रायद्वीपीय पठार

4–भारतीय मरूस्थल(थार का मरूस्थल)

5–तटीय मैदान

6–द्वीप समूह

हिमालय पर्वत–हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा का निर्धाण करता है। हिमालय पर्वत सिन्धु नदी से लेकर ब्रहामपुत्र नदी तक फैला हुआ है इसकी लम्बाई 2400 कि0मी0 है यह एक नवीन बलित पर्वत श्रेणी है जो भारत के उत्तर में अर्द्धवृताकार रूप में विद्यमान है इसकी चौडाई जम्मु कश्मीर में 400 कि0मी0 और अरूणाचल प्रदेश में 150कि0मी0 है।

हिमालय का विभाजन दो आधार पर किया गया है

1–उत्तर दक्षिण विभाजन

2– पश्चिम पूर्व विभाजन

उत्तर से दक्षिण का विभाजन 3 भागों में किया गया है–

1– हिमाद्रि(महान या आन्तरिक हिमालय)

2–हिमाचल(निम्न हिमालय या मध्य हिमालय)

3–शिवालिक

पश्चिम से पूर्व का विभाजन 4भागों में किया गया है–

1– पंजाब हिमालय

2–कुमाउ हिमालय

3–नेपाल हिमालय

4– असम हिमालय

उत्तरी मैदान– उत्तर का मैदान तीन प्रमुख नदी तन्त्रों सिन्धु,गंगा, ब्रहामपुत्र तथा इनकी सहायक नदीयों से बना है हिमालय के गिरीपाद में लाखों वर्षों तक नदीयों द्वारा लाये गये अवसाद के जमाव से इस मैदान का निर्माण हुआ है। इस मैदान की लम्बाई2400 कि0मी0 तथा चौडाई 240 कि0मी0 से 320 कि0मी0 है। यह मैदान भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला भाग है। कृषि के लिये अनुकूल दशाओं के कारण यह क्षेत्र सर्वाधिक कृषि उत्पादकता वाला क्षेत्र है इस कारण इसे भारत का अन्न भण्डार गृह कहा जाता है। उत्तर के मैदान को तीन भागों में विभाजित किया गया है–

1–सिन्धु का मैदान 2–गंगा का मैदान

3–ब्रहामपुत्र का मैदान

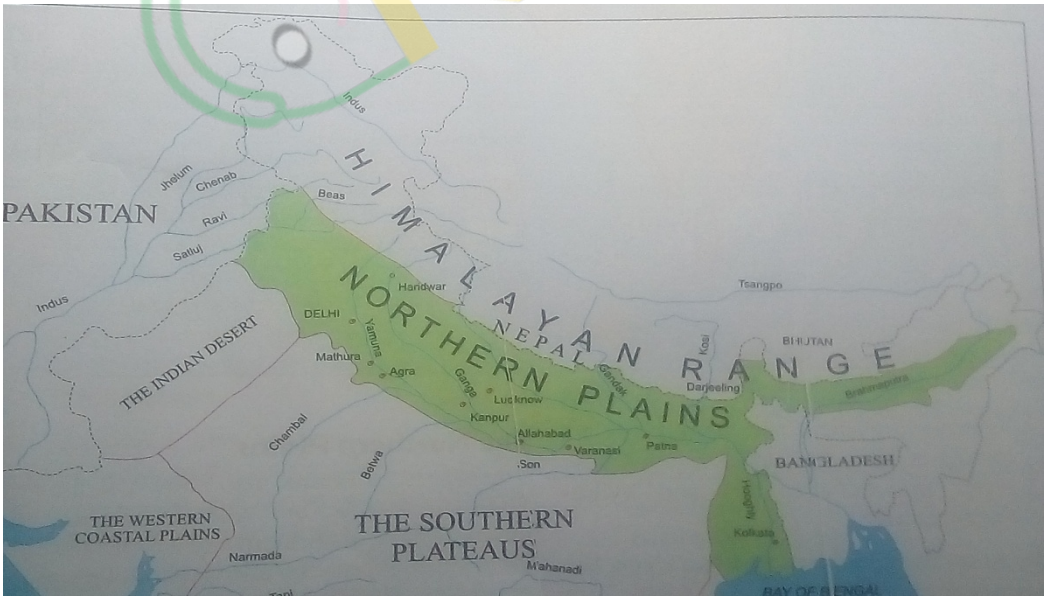

उत्तर से दक्षिण दिशा में इस मैदान पर तीन धरातलीय देखने को मिलते हैं–
1–भाभर 2–तराई 3–जलोढ

भाभर क्षेत्र– उत्तर भारत के विशाल मैदान की उत्तरी सीमा पर गिरिपाद मैदान मिलते है जो महिन मलवे तथा मोटे गोलाश्मों से निर्मित है उन्हें पंजाब में भाभर तथा असम में दुआर कहा जाता है। भाभर क्षेत्र 8से 10 कि0मी0 चौडाई की पतली पट्टी में शिवालिक गिरिपाद के समान्तर फैला है। इस क्षेत्र में कुछ नदियॉ भूमिगत हो जाती हैं।

तराई क्षेत्र– भाभर के दक्षिण में 10से 20 कि0मी0चौडाई का तराई क्षेत्र विस्तृत मिलता है। भाभर क्षेत्र की भूमिगत नदियॉ इस क्षेत्र के धरातल पर निकलकर बहनें लगती है। इन नदियों के सुनिश्चित प्रवाह क्षेत्र न होने के कारण यह क्षेत्र अनूप या दलदली बन जाता है।

जलोढ मैदान–तराई के दक्षिण में फैला भाग जलौढ मैदान है। इसमें पुराने जलौढों से निर्मित अपेक्षाकृत उची भूमि वाला भाग 'बांगर' कहलाता है,जबकि नवीन जलौढ से निर्मित बाढ. के मैदान की निम्न भूमि भाग 'खादर' कहलाता है।

प्रायद्वीपीय पठार–उत्तरी भारत के मैदान के दक्षिण में भारत के प्रायद्वीपीय भाग पर 600से 900 मीटर उचॉई वाला कटा–फटा पठारी भूखण्ड स्थित है।प्रमुख उच्चावच लक्षणों के आधार पर प्रायद्वीपीय पठार को तीन भागों में विभाजित किया गया है–
1–दक्कन का पठार 2–मध्य उच्च भू–भाग 3– उत्तरी–पूर्वी पठार

1—दक्कन का पठार — पश्चिमी घाट पूर्वी घाट सतपुडा मैकाल तथा महादेव इसमें सम्मिलित प्रमुख पहाडियॉ हैं ा इनकी उ चाई लगभग 15 मी0 है जो कि उत्तर से दक्षिण की ओर बढती जाती हैं प्रायद्वीपीय पठार की सबसे उची चोटी अनाईमुडी 2695मी है ा

2- मध्य उच्च भू—भाग— अरावली सतपुडा विंध्याचल कैमूर राजमहल की पहाडियॉ तथा छोटा नागपुर पठार इस भू भाग की औसत उ चाई 700 से 1000 मी0 है यह भू भाग दक्कन पठार की उत्तरी दिशा बनाता है यहॉ अनेक प्रकार की कायान्तरित चटटानें पायी जाती हैं जिसमें संगमरमर स्लेट व नाइस आदि प्रमुख हैं बनास व चम्बल आदि इस भू भाग की प्रमुख् नदियॉ हैं

3— उत्तरी—पूर्वी पठार - प्रायद्वीपीय पठार का विस्तारित भाग उत्तरी—पूर्वी पठार के रूप में मिलता है ऐसा माना जाता है कि भूगर्भिक हलचलों से इण्डियन प्लेटके उत्तर पूर्व दिशा में संचलन होने के कारण राजमहल पहाडियों तथा मेघालय पठार के मध्य एक भ्रंशघाटी का निर्माण हुआ जिससे मेघालय का पठार तथा कार्बी ऐंगलोंग पठार मुख्य प्रायद्वीपीय पठार से अलग हो गये

भारतीय मरूस्थल- अरावली पहाडियों से उत्तरी—पूर्वी भाग में रेतीले टीलों का एक शुष्क व वनस्पति रहित क्षेत्र विस्तृत है यहॉ बरखान पाये जाते हैं ढाल के आधार पर मरूस्थलीय भाग दो भागों में विभक्त किया जाता है।

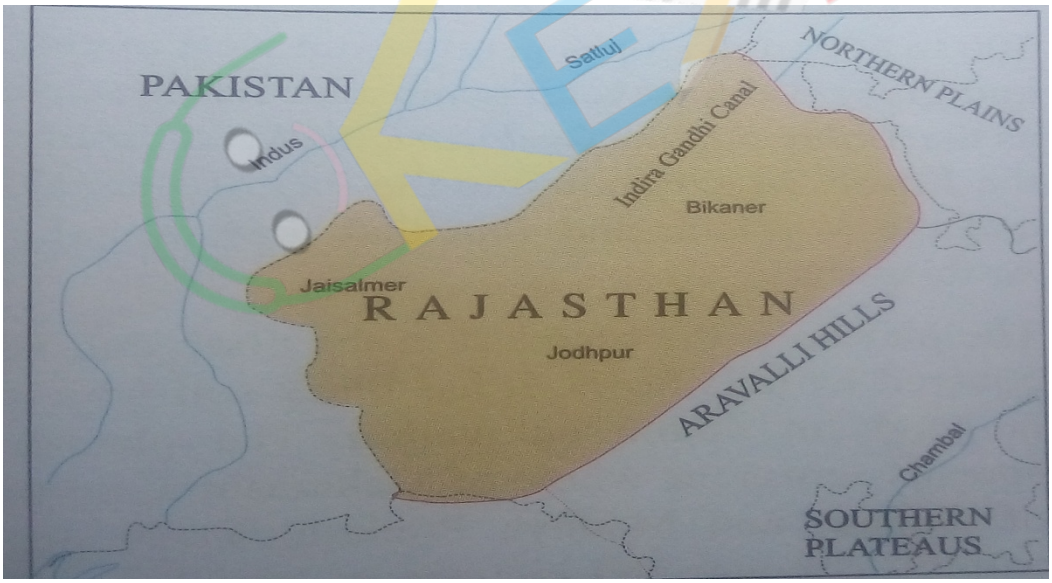

1- सिन्धु की ओर ढाल वाला उत्तरी भाग

2- कच्छ के रन की ओर ढाल वाला दक्षिणी भाग

तटीय मैदान - स्थिति तथा सक्रिय भू- आकृतिक प्रक्रियाओं के आधार पर प्रायद्वीपीय भारत के पश्चिमी व पूर्वी पाश्वों पर विस्तृत तटीय मैदानों को दो भागों में विभक्त किया जाता है-

1. **पश्चिमी तटीय मैदान-** प्रायद्वीपीय भारत के पश्चिम तट के सहारे- सहारे पश्चिमी तटीय मैदान एक संकीर्ण पट्टी में उत्तर से दक्षिण दिशा में विस्तृत मिलता है यह तटीय मैदान पत्तनों तथा बन्दरगाहों के विकास के लिए उपयुक्त भौगोलिक दशाएँ प्रदान करता है केरल राज्य में इस तटीय मैदान को मालाबार कहा जाता है मालाबार तट पर विशेष स्थलाकृति कयाल मिलती है जिसका उपयोग मछली पकडने तथा अन्त- स्थलीय नौकायन के लिए किया जाता है पश्चिमी तटीय मैदान पर बहने वाली नदियॉ डेल्टाई भागों का निर्माण नहीं करती पश्चिमी तट के साथ कुछ प्रवाल निक्षेप तथा सुन्दर पुलीन भी देखने को मिलते हैं
2. **पूर्वी तटीय मैदान** –पश्चिमीतटीय मैदान की तुलना में पूर्वी तटीय मैदान चौडे है तथा उभरे हुए तट के उदाहरण हैं इस तटीय प्रदेश में बंगाल की खाडी में गिरने वली नदियां महानदी गोदावरी कावेरी आदि डेल्टा बनाती हैं उभरा तट होने के कारण यहां पत्तन व पोताश्रय कम हैं। यह मैदान स्वर्ण रेखा नदी से कुमारी अन्तरीप तक फैला हुआ है। इस तट को कोरोमण्डल तट के नाम से जाना जाता है।

द्वीप समूह– भारत के दो प्रमुख द्वीप समूह हैं–

1.बंगाल की खाड़ी के द्वीप– बंगाल की खाड़ी के द्वीपों को दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है–

(अ)उत्तर में अण्डमान द्वीप समूह

(ब) दक्षिण में निकोबार द्वीप समूह

उक्त द्वीप समूहों में लगभग 572 द्वीप हैं जो समुद्र में जलमग्न पर्वतीय शिखरों के बिना डूबे क्षेत्र हैं। कुछ छोटे द्वीप ज्वालामुखी उद्‌गार से भी निर्मित मिलते हैं।

2.अरब सागर के द्वीप– अरब सागर के द्वीपों में लक्षद्वीप तथा मिनिकाय द्वीप समूह के 36द्वीप सम्मिलित हैं। यह पूरा द्वीप समूह 11डिग्री चैनल के द्वारा दो भागों में विभक्त किया गया है जिसके उत्तर में अमीनी द्वीप व दक्षिण में कनानोरे द्वीप हैं। इस द्वीप समूह में पर सागरीय लहरों द्वारा निर्मित पुलिन प्रमुखता से मिलते हैं।

विभिन्न भू–आकृतिक विभाग एक–दूसरे के पूरक हैं और वो देश को प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध बनाते हैं। उत्तरी पर्वत जल एवं वनों के प्रमुख स्रोत हैं। उत्री मैदान देश के अन्न भंडार हैं।पठारी भाग खनिजों के भण्डार हैं,जिसने देश के औद्योगीकरण में विशेष भूमिका निभाई है। तटीय क्षेत्र मत्स्यन और पोत संबंधी क्रिया–कलापों के लिए उपयुक्त स्थान हैं।इस प्रकार देश की विविध भौतिक आकृतियाँ भविष्य में विकास की अनेक संभावनाएँ प्रदान करती हैं।

मूल्यांकन

बहुविकल्पीय प्रश्न–

1. जब भू–गर्भिक प्लेटें एक दूसरे के निकट आती है तो..... का निर्माण करती हैं।

क. अभिसारी परिसीमा ख. अपसारी परिसीमा

ग. रूपान्तर परिसीमा घ. उपर

2. उत्तर का मैदान तीन प्रमुख नदी तन्त्रों सिन्धु ..... ब्रहामपुत्र तथा इनकी सहायक नदीयों से बना हैं।

क.गंगा ख.यमुना

ग.कावेरी घ.कृष्णा

3.पुराने जलौढों से निर्मित अपेक्षाकृत उची भूमि वाला भाग क्या कहलाता है?

क.खादर ख.बांगर

ग.अवसाद घ.जमाव

4- **प्रायद्वीपीय पठार की सबसे उची चोटी** कौन सी है?

क. अनाईमुडी ख.महेन्द्रगिरि

ग. पंचाचूली घ.कामेत

5. लक्ष्यद्वीप द्वीप समूह .....के द्वारा दो भागों में विभक्त किया गया है।

क .8 डिग्री चैनल ख. 10डिग्री चैनल

. ग. 11 डिग्री चैनल घ. 12 डिग्री चैनल

अभ्यास प्रश्न–

1.भारत को कितने प्राकृतिक भागों में बॉटा गया है? किसी एक भाग का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

2.बांगर व खादर में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

3.अपसारी परिसीमा क्या है?

4. हमारी पृथ्वी का भू–गर्भ किन 7 प्रमुख प्लेटों से बना है? उनका नाम लिखें।

5. भारत के उत्तरी मैदान का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तरमाला

बहुविकल्पीय प्रश्न–

1. क 2.क 3.ख. 4.क 5.ग